विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। -हरिऔध

बदलावों के प्रति स्वस्थ और सकारात्मक नज़रिया अपनाने की ज़रूरत!

कल एक पुरानी फ़िल्म देख रहा था। एक दृश्य था जिसमें नायिका की छोटी बहन उस वक़्त चलन में रहे स्पूल वाले बड़े टेपरिकॉर्डर पर कोई गाना सुन रही थी। जिन्हें नहीं पता उन्हें बताता चलूं कि एक ज़माना था जब टेपरिकॉर्डर लगभग सूटकेस के आकार के हुआ करते थे। महंगे तो होते ही थे। गिने-चुने लोग ही इस विलासिता को अफोर्ड कर सकते थे। इस तरह के टेपरिकॉर्डर्स के भी पहले वे ग्रामोफ़ोन चलन में थे जिनमें हेण्डल घुमा कर चाबी भरनी पड़ती थी। दो तरह के होते थे ये ग्रामोफ़ोन। एक तो अटैची की तरह के पोर्टेबल और दूसरे, ज़रा ज़्यादा भव्य लगने वाले, जिन्हें आप एचएमवी के लोगो में आज भी देख सकते हैं: एक कुत्ता एक भौंपू के सामने बैठा है। ये भव्य ग्रामोफ़ोन भोंपू वाले होते थे। हमारे देखते-देखते ये सब अब लुप्त हो गए हैं। नई पीढ़ी तो इनके बारे में जानती भी नहीं है। लेकिन जब मैं उस फ़िल्म में वह स्पूल वाला टेपरिकॉर्डर देख रहा था तो उसकी भव्यता मुझे सम्मोहित भी कर रही थी। भव्यता ग्रामोफ़ोन में थी, रिकॉर्डचेंजर में थी, स्पूल वाले टेपरिकॉर्डर में थी और भी बहुत सारी चीज़ों में थी। लेकिन अब वह सब अतीत है।

तकनीक ने इतनी तेज़ी से सब कुछ बदला है कि हम स्वयं चकित हैं। आज संगीत सुनना, और न केवल सुनना उसका खज़ाना अपने पास रखना जैसे बच्चों का खेल हो गया है। आपके पास अगर ठीक-ठाक-सा मोबाइल हो तो उसमें आप इतना संगीत सहेज सकते हैं कि उसे सुनने के लिए एक उम्र भी कम पड़े। उसे जहां और जब चाहे सुन सकते हैं। अगर सही ग़लत (पाइरेसी!) की फिक्र न करें तो यह सारा संगीत आपको निःशुल्क सुलभ है। एक-एक गाने के लिए इधर-उधर भटकना जैसे पिछले जन्मों की बात हो गई है। अब तो तकनीक की इस मेहरबानी से आपको सब कुछ, करीब-करीब पलक झपकते ही मिल जाता है।

और ऐसा ही अन्य बहुत सारी कलाओं और साहित्य के मामले में भी हुआ है। मुझ जैसे जिन लोगों को किताबें खरीदने और पढ़ने का जुनून है वे इस बात से दुःखी रहते थे कि जो पढ़ना है उसे प्राप्त कहां से करें, और कर लें तो घर में इतनी जगह कहां से निकालें कि उसे सहेज कर रख सकें। अब जैसे यह समस्या रही ही नहीं है। और अगर आप चाहें तो आपको पढ़ने की भी ज़हमत से निजात मिल सकती है। आप पढ़ने की बजाय सुन कर भी संतुष्ट हो सकते हैं। बहुत सारा साहित्य निःशुल्क ही आपको सुलभ है और उसे सहेज कर रखना भी बहुत सुगम हो गया है। एक पॉकेट बुक के आकार वाले उपकरण (जैसे किण्डल) में आप हज़ारों किताबें सहेज कर रख सकते हैं। कितना रोमांचक लगता है एक भरा-पूरा पुस्तकालय अपने हाथ में लिये हुए एक कमरे से दूसरे कमरे में, एक शहर से दूसरे शहर में, एक देश से दूसरे देश में आवागमन कर लेना।

हम हर बदलाव का अपने नज़रिये से आकलन करें, उसे परखें और उसके बाद ही उसे अस्वीकार या स्वीकार करें - यही औचित्य का तकाज़ा है। यह भी समझ लिया जाना चाहिए कि हर बदलाव हरेक के लिए एक समान अर्थ नहीं रखता है। इसलिए बदलाव के प्रति सामूहिक रुख का कोई अर्थ नहीं है।

आप दुनिया भर की फ़िल्में, वे फ़िल्में जिन्हें देखने के लिए आप बरसों बरस इंतज़ार करते थे, फ़िल्म सोसाइटियों के सदस्य बनते थे, अब आपकी पहुंच में हैं। अगर आपकी रुचि चित्रकला में है तो अपने कमरे में बैठे-बैठे दुनिया भर के संग्रहालयों का भ्रमण कर सकते हैं और वह भी इस तरह कि आपको महसूस ही न हो कि आप सशरीर वहां मौज़ूद नहीं हैं।

जो बदलाव आस्वाद में आया है वही सृजन में भी आया है। अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाएं। आप पाएंगे, अब लिखना पहले से ज़्यादा आसान हो गया है। यहां तक कि बिना लिखे भी लिख सकते हैं। मेरा आशय बोलकर लिखने की नई प्रविधि से है। आप अपने लिखे को सहेज सकते हैं, उसमें मनचाहा बदलाव कर सकते हैं। कर पहले भी सकते थे, बल्कि करते थे लेकिन यह सुगमता नहीं थी। आप बिना लम्बे-चौड़े तामझाम के फोटोग्राफी कर सकते हैं। मात्र एक उपकरण से आप ऐसा संगीत रच सकते हैं जिसे सुनते हुए एक बड़े ऑर्केस्ट्रा को सुनने का सुख मिले। बिना रंगों और कैनवस के आप तस्वीरें बना सकते हैं। डिजिटल कण्टेण्ट का सर्जक बनने से हम पहले से कई गुना ज़्यादा समर्थ और सक्षम हो गए हैं।

सब कुछ बदल गया और बहुत तेज़ी से बदलता जा रहा है। सुलभता बढ़ती जा रही है, उसकी गुणवत्ता बढ़ती जा रही है। ये बातें स्वागत योग्य हैं। लेकिन जब मैं यह बात कह रहा हूं तो मन के किसी कोने से एक आवाज़ यह भी आ रही है कि प्रयत्न करके चीज़ों को प्राप्त करने पर जो सुख मिलता था वह इस सहज सुलभता ने हमसे छीन लिया है। चीज़ें इतनी आसानी से और इतनी विपुलता में हमारे सामने फैली पड़ी हैं कि वे जैसे हमें बेमानी लगने लगी हैं। जब आप किसी किताब के लिए लाइब्रेरी-दर-लाइब्रेरी भटकते थे और बहुत प्रयत्नों के बाद उसे अपने हाथों में पाते थे, तब जो सुख मिलता था वह सुख किसी किताब को तुरंत डाउनलोड कर लेने पर कहां मिलता है? जो सुख कई जगह तलाश कर लेने के बाद किसी छोटी-सी दुकान पर अपना मनचाहा गाना मिल जाने और फिर उसे अपनी कैसेट में रिकॉर्ड करवा कर सुनने पर मिलता था वह सुख अब जैसे कहीं विलुप्त हो गया है। यही बात अन्य कलाओं के बारे में भी है। हमारे पास है बहुत कुछ लेकिन उसमें वह रस, वह आनंद नहीं है। लेकिन ये सब बातें मेरी पीढ़ी करती है। नई पीढ़ी तो इस तरह नहीं सोचती है। उसका यथार्थ तो यही सब है और वह इससे संतुष्ट है।

लेकिन यह सब मैं क्यों कह रहा हूं? हम जहां तक चले आए हैं, क्या वहां से पीछे लौट जाना सम्भव है? और क्या हमें लौटने के बारे में सोचना भी चाहिए? बहुत सारी पुरानी चीज़ों के प्रति अपने अनुराग के बावज़ूद मैं इस बारे में बहुत स्पष्ट हूं कि हम पीछे नहीं लौट सकते। हमें आगे ही बढ़ना होगा। और जब हम पीछे नहीं लौट सकते तो फिर हमें जो वर्तमान है और जो भविष्य में होने वाला है उसके प्रति एक तार्किक और स्वस्थ नज़रिया भी अपनाना होगा। इसी में हमारा हित है।

तकनीक हमारी ज़िंदगी को बहुत तेज़ी से बदल रही है और हम चाहें या न चाहें ये बदलाव तो आएंगे ही। बहुत मुमकिन है कि हममें से कुछ लोग एक चीज़ को अपनाएं और दूसरी को न अपनाएं। कोई आज भी हाथ से लिखना ही पसंद कर सकता है, कोई आज भी कागज़ पर छपी किताब को पढ़कर ही असली सुख महसूस कर सकता है, कोई आज भी फ़िल्म वाले कैमरे से ही फ़ोटोग्राफी कर सकता है। यह सब हमारे वैयक्तिक चयन की बातें हैं और इन पर कोई बहस या टिप्पणी करना बेमानी है। असल बात तो यह है कि हमें बदलावों के प्रति एक स्वस्थ और सकारात्मक नज़रिया अपनाना होगा। अति सबकी बुरी होती है। स्वीकार की भी और अस्वीकार की भी। एक स्वस्थ दृष्टि यह हो सकती है कि हम नए के प्रति खुला और उदार नज़रिया रखें और उससे हमारा जो हित हो रहा है उसे मुक्त मन से स्वीकार करें, और ऐसा करते हुए उन बातों पर भी ध्यान दें जो उस नए के कारण हो रही हैं और जिन्हें नहीं होना चाहिए था। बहुत बार नए और पुराने के बीच संतुलन और तालमेल से भी बात बन जाती है। आप मुद्रित किताब भी पढ़ सकते हैं और यथावश्यकता उसके डिजिटल संस्करण का भी उपयोग कर सकते हैं। आप किसी रंगशाला या चित्र वीथी में भी जा सकते हैं और छोटे या बड़े पर्दे पर भी उनका आनंद ले सकते हैं। मुझे हमेशा लगता है कि जीवन का असल आनंद संतुलन में ही है। अति से बात बनती नहीं है। हो सकता है किन्हीं खास क्षणों में हम अतिवादी रुख अख़्तियार कर लें, यह भी हो सकता है कि वह रुख हमें तात्कालिक रूप से जीत दिला दे, हमें सर उठाने का मौका दे दे, हमें त्वरित संतोष प्रदान कर दे, हमेशा ऐसा ही हो यह क़तई ज़रूरी नहीं है।

जीवन में जो बदलाव आ रहे हैं, उन सबके प्रति नकार का भाव उतना ही अनुचित है जितना उन सबके प्रति आंख मूंद कर स्वीकार का भाव है। ये दोनों भाव अतिवादी हैं और इनसे बच कर चलने में ही हमारा हित छिपा हुआ है। हम हर बदलाव का अपने नज़रिये से आकलन करें, उसे परखें और उसके बाद ही उसे अस्वीकार या स्वीकार करें - यही औचित्य का तकाज़ा है। यह भी समझ लिया जाना चाहिए कि हर बदलाव हरेक के लिए एक समान अर्थ नहीं रखता है। किसी के लिए वह बहुत अच्छा हो सकता है और किसी अन्य के लिए वैसा नहीं भी हो सकता है। इसलिए बदलाव के प्रति सामूहिक रुख का कोई अर्थ नहीं है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राजस्थान के लोक-चित्र- एक सशक्त और समृद्ध परंपरा

कला जब लोकतान्त्रिक रूप से सभी की हो जाती है तो लोक जीवन की या लोक कलाएं हो जाती है। अन्य लोक कलाओं की तरह लोक चित्र भी मानवीय संवेदनाओं और भावों का प्रदर्शन ही तो होते हैं।

लोक कलाएं ही तो है, चाहे लोक-चित्र ही क्यों न हो, इनमें ही तो संस्कृति और संस्कारों की जड़े फैली होती है और लोक-जीवन को प्राणवायु देती रहती हैं। राजस्थान की चित्रांकन-परम्परा में केवल रंग और कूंची का समागम ही नहीं है, बल्कि इनमें कला की अन्य विधाएं, चाहे गीत व नृत्य हो, कहानियां हो, पर्यावरण हो, पशु पक्षी हो, लोकाचार, लोक-संस्कार, धर्म-अध्यात्म, ग्रह-नक्षत्र और हमारी जीवन शैली हो, वह भी इन लोक चित्रों में शामिल है।

अन्य क्षेत्रों की भांति, राजस्थान के लोक चित्रों में भी धार्मिक अनुष्ठान, संस्कृतिक समन्वय, आर्टिस्टिक इनोसेंस और विशिष्ट शैली या परपोसन का समावेश देखा जा सकता है। लोक चित्रांकन-परम्परा में कोई ज्यादा तामझाम वाले उपकरणों की या टूल्स की जरूरत नहीं पडती और यही लोक चित्रों की या लोक कलाओं की खूबसूरती होती है। आमतौर पर किसी क्षेत्र विशेष के लोक चित्र बनाने हेतु आस-पास पाए जाने वाले पेड़-पौधों की टहनियां, नेचुरल फाइबर, मिट्टियां और गोंद काम में आती है। फड चित्रों या पिछवाई में लोकल पिगमेंट्स जैसे हिर्मिच, हिंगलू, पेवडी बहुत काम में आते हैं, तो मांडना के लिए गाय का गोबर, खड़िया मिट्टी, हल्दी आदि का उपयोग होता है तो अभिप्राय यह है कि भाव को प्रकट करने के लिए लोक कलाकार या यूं कहें लोक चित्रकार कभी भी संसाधनों का मोहताज नहीं रहा। राजस्थान के संदर्भ में तो लोक चित्रों के नाना प्रकार होते हैं और किसी भी चित्र के तीन एलिमेंट्स होते है, सपोर्ट - यानि किस सतह पर वह चित्र बना है जैसे कपडा, कागज, भित्ति और लकडी। इसी तरह से माध्यम जैसे रंग जिसमे गेरू, खड़िया, नील, हिर्मिच, पेवडी आदि प्रमुख है, वैसे तकनीक तो आमतौर पर एक जैसी ही होती है बस थोडा फीचर और नयन नक्श में बदलाव होता है। यह कलाकार की परंपरा और कभी -कभी व्यक्तिगत शैली पर भी निर्भर करती है, जैसे फड या पिछवई कपडे पर बनाये जाते है, पाने कागज पर और कावड लकडी पर।

राजस्थानी लोक चित्रों पर पर लिखना अथाह और असीमित है । उदयपुर के पास में गांव है बस्सी और जिसमें लकड़ी के खिलौने, पोर्टेबल टेम्पल आदि का विषय देवी-देवताओं का जीवन चरित्र व पौराणिक घटनाएं और महापुरुषों की जीवन गाथा हो सकती है और आज के दौर में तो कंटेंपरेरी विषयों पर भी चित्र बनाए जा रहे हैं। कावड बनाने वाले कारीगर, सुथार या जांगिड ब्राह्मण होते है और जो कावड भी बनाते है और चित्र भी। जंगलों में पाए जाने वाली कवेलू के महीन टुकडो को पीसकर गोंद के साथ मिलकर कावड पर लगाया जाता है और इस प्रक्रिया को इन्टाला कहा जाता है फिर लाल पत्थर घिस कर उसको रंगा जाता है। कावड़ पढने वाले कावड़िया भाट और जो जजमान आमंत्रित करते थे, वे कावड़ खुलवाने वाले कहलाते थे।

भारतीय लोक चित्र परंपरा में कावड़ भी एक तरह की विजुअल एड ही है और पुराने दौर में नीतिगत व मानवीय मूल्यों को धर्म व अध्यात्म के माध्यम से समझाने का सार्थक व लोकतांत्रिक तरीका रहा है। जब कावड़ के सभी पट पूरी तरह से खुल जाते हैं तो बीच में तीन मूर्तियां रहती है जो आमतौर पर रामचंद्र जी की, सीता जी की और लक्ष्मण जी की होती है । अब इन दिनों अलग-अलग विषयों पर कावड़ बन रही है। स्टोरी टेलिंग में या सूचनाओं के संप्रेषण में कावड सरीखे विजुअल ऐड्स महत्वपूर्ण होते थे और लोगों में नव भाव पैदा कर देते थे। राजस्थान में लकडी

अब्दुल लतीफ़ उस्ता

माध्यम पर कावड़ के अलावा देवल, तोरण, खांडे, बाजोट, चोपड़ा, माणकथंभ, आलिये व गंजीफे आदि बनते थे। कपड़े पर भी फड और पिछवाई लोक चित्र बनते हैं। शाहपुरा, भीलवाड़ा का जोशी परिवार फड बनाने की कला में बहुत माहिर रहा है और वास्तव में इनको बनाने का मकसद वही होता है जो कावड़ का होता है। फड स्क्रॉल की तरह होता है जिस पर अलग-अलग लोक देवताओं के जीवन की घटनाओं पर चित्र बनाए जाते रहे हैं। राजस्थान में फड बनाने की बड़ी सशक्त परंपरा रही है और चित्रित लोक देवताओं का भी बहुत मान और महत्व रहा है।

पाबू, हडबू, रामदेव, मांगलिया मेह। पांचू पीर पधारजो गोगाजी जेह

लोक देवताओं ने सामाजिक मूल्यों के लिए, सामाजिक समरसता के लिए और समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए अपने जीवन को न्योछावर किया, तो उन्हीं की सुकीर्ति है जिसको बताने के लिए फड़े बनती रही हैं। सबसे रोचक बात यह है कि फड बांचना अपने आप में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसे लयबद्ध व संगीतमय तरीके से बाँचा जाता है ताकि आमजन के लिए रुचिकर व ग्राह्य हो सके। फड बांचने वाले को भोपा और भोपन कहा जाता है। देवनारायण जी, रामदेव जी, पाबूजी की फड़े महत्वपूर्ण है, लेकिन आजकल कंटेंपरेरी मुद्दों जैसे बेटी बचाओ दहेज विरोधी अभियान जैसे मुद्दों पर भी फडे बनती व बांचती देखी जा सकती है।

▪ लोक कला का संरक्षण कला के सापेक्ष में व रोजगार के अवसरों को पैदा करने में भी महत्वपूर्ण रहेगा

लोक कलाओं की एक खूबी भी यह रहती है कि वह स्वयं को मूल में रखते हुए नए एलिमेंट्स को अपने में मिला लेती है। कपड़े पर अन्य लोक चित्र बनते हैं उनमें पिछवाईयाँ प्रमुख है। पिछवई का सम्बन्ध प्रसिद्ध श्रीनाथजी मंदिर से है। पिछवाई भी कपड़े पर बनती है और फड भी कपड़े पर बनी है तो फिर उनमें अंतर क्या रहा? पिछवाई को नरेट नहीं किया जाता, आम तौर पर इसमें कंपार्टमेंटाइजेशन भी नहीं होता जैसा कि फड में होता है।मांडने दीवारों पर बनाए जाने वाले चित्र है जिसमे दीवार पर मिट्टी और गाय के गोबर से लेप किया जाता है और फिर अलग-अलग पैटर्न में हल्दी, हिंग्लू जैसे रंगों से अलग-अलग अवसरों के लिए मांडने बनाए जाते हैं। जैसे पगल्या - दीपावली के समय लक्ष्मी पूजन से पूर्व देवी के घर में आगमन के रूप में, ताम- विवाह के समय लग्न मंडप में शुभ दाम्पत्य हेतु, चैकड़ी- होली के अवसर पर, थापा-घर की चौखट पर कुमकुम तथा हल्दी से बनाए गये हाथों के निशान होते हैं। इसी तरह से मोरड़ी माण्डणा- दक्षिणी तथा पूर्वी राजस्थान में मीणा जनजाति की महिलाओं द्वारा घरों में बनाई गई मोर की आकृति मोरड़ी माण्डणा कहलाती है। स्वास्तिक /सातिया/सांखिया- उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान में सांखिया, तथा पूर्वी राजस्थान में सातिया कहलाता है।मांगलिक अवसरों पर ब्राहाणों के द्वारा मन्त्रोचार से पूर्व पूजा के स्थान पर स्वास्तिक का अंकन किया जाता है।

मांडणा बनाए जाने के दौरान महिलाएं सुंदर आवाज में गीत भी गाती हैं। लोक चित्र को अन्य माध्यमों पर उकेरने के अलावा मानव ने खुद की देह पर भी चित्रांकन किया है, जिनमे मेहंदी और गोदना प्रमुख है। अलग -अलग अवसरों पर मेहंदी लगाना राजस्थान की प्राचीन लोक कला रही है जो समृद्धि और जीवन का प्रतीक है।

रहीमजी ने लिखा भी है
यों रहीम सुख होत है, पर उपकारी के संग।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।।

इसी तरह ख्यातनाम साहित्यकार सौभाग्य सिंह शेखावत जी के शब्दों में

रच दे मेहँदी राचनि, नाचन रनमुख नाह।
जीता जंग बधाव्स्या, कटिया तन संग दाह।।

मेहँदी के अलावा देह सिंगार की गोदना परम्परा आज दुनिया के कोने-कोने में इस कदर पहुंच गई है कि इसका अनुभव करने के लिए कई पर्यटक राजस्थान खींचे चले आते हैं। कुछ लोकप्रिय गोदना डिज़ाइनों में चेहरे पर वृत्त और अर्धचंद्राकार, डॉट पैटर्न, बिच्छू, तोते, फूल और बाँहों पर देवी-देवताओं की छवियां शामिल हैं।बछड़ों पर और महिलाओं की छाती के बीच फूलों की एक विशाल विविधता, शाश्वत जीवन के पेड़ या कल्प वृक्ष और ऊंट, घोड़े, मोर और मगरमच्छ की एक जोड़ी जैसे जानवरों के भी गोदना बनाये जाते है। राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र की महिलाएं अपने प्रेम और भक्ति के प्रतीक के रूप में अपने पति के नाम के गोदना बनवाती हैं। सार रूप में, राजस्थान की लोक चित्रांकन परम्परा अपने आप में निस्संदेह अनूठी है और इस विधा का संरक्षण न केवल कला के सापेक्ष हितकारी है बल्कि रोजगारपरक अवसरों को पैदा करने में भी महत्वपूर्ण रहेगा।

अब्दुल लतीफ़ उस्ता,
कला एवं विरासत अध्येता

मिनी सचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय में फैली गन्दगी

सादुलपुर, (निसं)। मिनीसचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय की साफ-सफाई नहीं होने के कारण जहां मिनीसचिवालय में आने वाले लोग परेशान हैं, वहीं दुसरी ओर प्रलेख लेखक, अधिवक्तागण व स्टाम्प वेंडरों को शौचालय में फैली गन्दगी में ही शौच जाने का मजबूर होना पड़ रहा है। गंभीर बात तो यह है कि इस शौचालय में शराब के खाली पव्वों को ढेर लगा हुआ है ।

इस परिसर में प्रशासनिक अधिकारियों व पुलिस अधिकारी तथा न्यायिक अधिकारियों के निवास करने के बाद भी बिना किसी डर व भय के लोग यहां पर शराब पीकर चले जाते हैं तथा शराब के खाली पव्वे शौचालय में फैंक कर इतिश्री करते हैं। यहां एसडीएम राजगढ, तहसीलदार राजगढ, एडिशनल एसपी एवं न्यायिक अधिकारियों सहित अन्य कार्मिकों के आवासीय भवन भी बने हुए हैं । हांलाकि इस शौचालय की गंदगी के लिए गहरा होदनुमा गटर बना हुआ था। जिसकी ऊपर से छत गिरने के बाद उपखण्ड अधिकारी राजगढ़ द्वारा जीर्णोद्धार नहीं करवाने के बजाय गटर को मिटटी से भरवा दिया गया। जिससे अब शौचालय में ना तो पेशाब की निकासी हो पाती है और ना ही इस शौचालय की साफ-सफाई की पाती है। आज आमजन, अधिवक्तागण, स्टाम्प वेंडर एवं प्रलेख लेखकों को गन्दगी एवं खाली पव्वों से भरे शौचालय में ही शौच जाने को मजबूर होना पड़ रहा है।

मिनीसचिवालय के मुख्य द्वार पर बने शौचालय की साफ-सफाई नहीं होने से लगा गन्दगी व शराब के खाली पव्वों को ढेर ।

▪ यहां एसडीएम राजगढ, तहसीलदार राजगढ, एएसपी एवं न्यायिक अधिकारियों के आवास बने हुए हैं

▪ आमजन, प्रलेख लेखक, अधिवक्तागण व स्टाम्प वेंडरों को गन्दगी में ही शौच जाना पड़ रहा है

लाखों रुपए की लागत से बना मसूदा का मुख्य बस स्टैंड बदहाल

मसूदा, (निसं)। मसूदा कस्बे में बने नए बस स्टैंड का रख रखाव नहीं होने एवं बसों का ठहराव बंद हो जाने से हाल बेहाल हो गया है। मसूदा कस्बे में यात्रियों की सुविधा एवं बसों के लिए पर्याप्त स्थान को लेकर रामगढ़ चौराहे पर नए बस स्टैंड का निर्माण कराया गया था ।

बस स्टैंड के निर्माण के बाद कुछ समय तक रोडवेज आगार द्वारा बुकिंग भी शुरू की जिससे सभी मार्गों पर आने-जाने का सिलसिला शुरू हो गया था। इससे यात्री भी बस स्टैंड पर जाकर बसों का इंतजार कर लेते थे लेकिन पिछले दो-तीन सालों से नए बस स्टैंड पर रोडवेज आगार की और से बुकिंग बंद कर दिए जाने के बाद बस स्टैंड का हाल बेहाल होना शुरू हो गया। इसके चलते नया बस स्टैंड का इंतजार करने वाले यात्रियों को बसों के बस स्टैंड के बाहर से ही निकल जाने से बैरंग लौटना पड़ता है। कई बार कस्बे वासियों द्वारा बस स्टैंड को सुचारू चलाने को लेकर गुहार लगाई जाने के बाद भी कोई सुध नहीं लेने से वर्तमान में बुकिंग के रूप में रखी कुर्सी एवं अन्य सामान पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए हैं साथ ही यात्रियों के बैठने के लिए लगाई गई कुर्सियां भी अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रही हैं साथ ही बस स्टैंड भवन का फर्ज भी जगह-जगह से क्षतिग्रस्त हो रहा है। लाखों रुपए की लागत से बना नया बस स्टैंड अब लावारिस मवेशियों की शरणगाह व गंदगी फैलने के लिए कचरा पात्र बनकर रह गया है ।

जिला परिषद सदस्य दिनेश टाक ने जिला प्रमुख सुशील कंवर पलाड़ा को पत्र प्रेषित कर मुख्य बस स्टैंड को दुरुस्त कराने के लिए बजट आवंटन करने की मांग की। उन्होंने पत्र में बताया कि रामगढ़ बांदनवाड़ा रोड पर ग्राम पंचायत मसूदा द्वारा कई वर्ष पूर्व बस स्टैंड भवन का निर्माण कराया गया था लेकिन पिछले कुछ साल से बस स्टैंड का संचालन नहीं होने से बस स्टैंड की इमारत खंडर बन गई एवं परिसर में गंदगी के ढेर लग गए। यात्रियों के लिए बनाए गए सुविधा घर भी खंडित हो गए दीवारें क्षतिग्रस्त हो गई हैं।

मसूदा के नए बस स्टैंड पर फैली गंदगी एवं घूमते आवारा जानवर।

▪ बुकिंग, बिजली पानी बंद, दरवाजे, कुर्सियां एवं टूटा फर्नीचर

▪ लावारिस मवेशियों व असमाजिक तत्वों की शरणागाह बना बस स्टैंड

▪ जिला परिषद सदस्य दिनेश टांक ने बस स्टैंड के लिए मांगा बजट

राशिफल

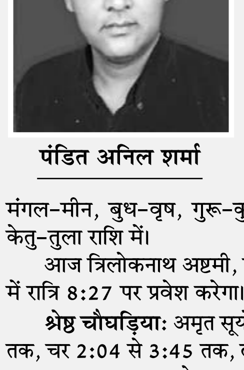

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 23 मई, 2022

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 10:22 तक, वैधृति योग रात्रि 1:05 तक, कौलव करण दिन 11:35 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-कुम्भ, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज त्रिलोकनाथ अष्टमी, वैधृति पूण्य, पंचक है और शुक्र मेष राशि में रात्रि 8:27 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:21 तक, शुभ 9:02 से 10:42 तक, चर 2:04 से 3:45 तक, लाभ-अमृत 3:45 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:07

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता वातावरण बना रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में आपसी अनबन-वाद-विवाद बढ़ने का भय है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मकर
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वभाव पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।